ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.18, NO.1, JAN-JUNE,2023 /36

राष्ट्रीय नाटकों में मूलशंकर माणिक्य लाल का योगदान

–डॉ0 हरीराम
सहायक आचार्य (संस्कृत विभाग)
आर.आर.डी पी.जी. कालेज, पीपरपुर, अमेठी

मूलशंकर याक्षिक जी का जन्म गुजरात प्रदेशान्तर्गत खेड़ा जनपद के नड़ियाद नामक ग्राम में गौतम गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में इकतीस जनवरी सन अट्ठारह सौ छियासी ई0 (31/01/1886) को हुआ था। उनके पिता का नाम माणिक्य लाल एवं माता का नाम अतिलक्ष्मी था। उस समय सम्भवतः नड़ियाद का नाम नटपुर था, जिनका उल्लेख उनके नाटकों–प्रतापविजयम्, छत्रपतिसाम्राज्यम् एवं संयोगिता स्वयंवरम् में हुआ है– ''अद्य खलु नटपुरवास्तव्यमुलंकरविरचितेन...।''[1]

ऐसी ही संस्कृत साहित्य में प्रकृत कवि श्री मूलशंकर याज्ञिक जी का नाम लिया जाता है जिन्होंने अन्य नाटककारों की भाँति अपने नाटकों के माध्यम से राष्ट्ररक्षा हेतु भारतीय जन–जन में जागृति पैदा की है। याज्ञिक जी ने संस्कृत नाट्य साहित्य में मुख्यतः तीन ही राष्ट्रीय नाटकों की सर्जना की है जिनमें भारतीय वीर सपूतों को अपने नाटक का नायक चुना है। वे नायक– (राणा प्रताप सिंह, छत्रपति शिवाजी एवं पृथ्वीराज चौहान) भारतीय इतिहास में अपनी वीरता के लिए सदैव स्मरणीय हैं। इन्हीं उत्कृष्ट कृतियों के कारण ही मूलशंकर याज्ञिक जी को बींसवी शती के कवियों एवं नाटककारों में याद किया जाता है।

हमारे देश में संस्कृत साहित्यकार भी राष्ट्र की दोनों (युद्धकाल एवं शान्तिकाल) दशाओं से राष्ट्रवासियों के हृदय में बसी हुई राष्ट्रिय भावना को अपने साहित्य सर्जना के माध्यम से प्रकाशित किया करते हैं। इन संस्कृत साहित्यकारों की राष्ट्रीय सम्पदा में राष्ट्रिय भावना की अभिव्यक्ति राष्ट्रप्रेम, भौगोलिक स्थिति, मातृभाव, राष्ट्रसेवा संस्कृति एवं सभ्यता आदि रूपों में हुआ करती है। वे अपनी नवोन्मेष प्रतिभा द्वारा राष्ट्रिय भावना को आलम्बन देने वाले और उद्दीप्त करने वाले अनेक प्रकार के प्रभावशाली विषयों की उद्भावना कर सकते हैं।

जिन साहित्यकारों के हृदय में स्वराष्ट्र के प्रति प्रेम होता है आत्मगौरव होता है, भक्ति होती है, उत्तरोत्तर उन्नति की इच्छा होती है और राष्ट्र की रक्षा के लिए आत्म बलिदान तक करने की प्रबल इच्छा होती है उनके साहित्य में कहीं न कहीं किसी न किसी रूप में राष्ट्रिय भावना उदित हो उठती है। इस स्थिति का साहित्य पर देशकाल की स्थिति का पर्याप्त प्रभाव पड़ता है। राष्ट्रिय भावना का उत्प्रेरक प्रभाव स्वराष्ट्र पर अन्य राष्ट्र द्वारा आक्रमण करने के समय होता है, वह शान्ति के दिनों में नहीं होता है। क्योंकि युद्ध के दिनों में न केवल पूरे राष्ट्र की प्रतिष्ठा बल्कि सुख समृद्धि भी संकटाग्रस्त हो जाती है। अतः सभी लोग राष्ट्रिय भावना से प्रेरित होकर तन, मन, धन से राष्ट्र या देश की प्रतिष्ठा एवं समृद्धि की प्रतिष्ठा हेतु जुट पड़ते हैं।इस प्रकार मूलशंकर याज्ञिक जी ने अधोलिखित नाटक के माध्यम से भारतीय जन–जन में राष्ट्र रक्षा हेतु जनसंदेश दिया है–

1– प्रतापविजयम्

राष्ट्रीय भावना से परिपूर्ण इस नाटक में स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु मेवाड़धिप राणा प्रताप सिंह द्वारा किये गये कृत्यों का वर्णन किया गया है। प्रस्तुत नाटक का शुभारम्भ सम्राट अकबर की अधीनता के तले रहने वाले मान सिंह के बीच होती है। मान सिंह, राणा प्रताप सिंह को मुगल सेना में सर्वोच्च पद प्राप्त कर अकबर की अधीनता स्वीकार करने का प्रलोभन देता है। लेकिन प्रताप सिंह कहते हैं कि सूर्य

कुल में उत्पन्न अकबर में मैत्रीभाव असम्भव है इस प्रकार राणा प्रताप सिंह ने अपने राष्ट्र एवं राष्ट्र धर्म की मान–मर्यादा की रक्षा करने के लिए अकबर जैसे पराक्रमी बादशाह का प्रतिरोध कर राष्ट्रिय स्वतंत्रता की रक्षा की।

'प्रतापविजयम' नाटक के प्रथम अंक में–

प्राप्नोतुं राष्ट्रं त्वचिराद्विनाशं कुलं समग्रं सद्य।

सहस्त्रधाशु प्रतिविदीर्यता वपुः स्वातन्त्रमेकं शरणं परं मे।[2]

अर्थात् क्षणभर में राष्ट्र नष्ट हो जाय, समस्त कुल को शीघ्र ही लय कर दो, इस शरीर को चाहो अभी हजारों टुकड़ों में काट डालो, मेरे लिए एक मात्र स्वतंत्रता ही शरण है।

'प्रतापविजयम्' नाटक के द्वितीय अंक में राणा प्रताप का कथन–

स्वरक्षणार्थं रचिताग्रमण्डुलान, तुरुष्कसेनानिवहान् विभिद्य।

भल्लाग्रविद्धं स्वजनद्रुहं तं, हत्वा ज्वलन्तं शमयामि कोपम्।[3]

अर्थात् अपनी रक्षा के लिए, तुर्क सेना के मण्डल (ब्यूह) को देखकर भाले की नोक से भेदकर तथा अपने कुल के द्रोही को मारकर मैं अपने ज्वलित क्रोध को शान्त करूँगा।

याज्ञिक जी प्रताप सिंह को माध्यम बनाकर कहते हैं कि केवल पेट का पालन करने वाले अपने कार्यों का फल भोगकर समय पर सभी मरते हैं। लेकिन धन्य वही हैं जो राष्ट्र की सेवा में तत्पर रहकर इस धरती पर मरता है, इस प्रकार के कथनों द्वारा जन–जन में राष्ट्रियता के प्रति प्रेम–भाव जगाये गये हैं। गान्धार विद्रोह में जिस प्रकार नारियों ने चण्डी का रूप धारण कर राष्ट्र की रक्षा की है वह सदैव स्मरणीय रहेगा। दूसरे की अधीनता तले सुख से जीने की अपेक्षा, स्वतंत्र जीवन दुःख के साथ जीना श्रेयस्कर बतलाया गया है।

महाराणा प्रताप सिंह भारत देश के वे शिरोमणि हैं जिन्होंने हल्दी घाटी युद्ध की पराजय के बाद वनों–पर्वतों एवं पहाड़ों पर घूमते हुए वनवासियों की सहायता से राष्ट्र की रक्षा के लिए कर्त्तव्यनिष्ठ हैं। वे लौकिक एवं पारलौकिक सुखों को तिलांजलि देकर राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए उपदेश दिये हैं। अपने राष्ट्र के प्रति निष्ठा रखने वाले जन की प्रशंसा की गयी है।

इस प्रकार याज्ञिक जी ने राष्ट्र के वीरों को राष्ट्र की शान माना है। राष्ट्र विरोधियों के प्रति घृणा के भाव जगाये हैं। ऐतिहासिक कृतियों की रचनाकर याज्ञिक जी ने राष्ट्रिय नाटकों में महत्त्वपूर्ण स्थान दर्शाया है।

2– छत्रपतिसाम्राज्यम्

श्री मूलशंकर याज्ञिक कृत 'छत्रपतिसाम्राज्यम्'' नाटक में मध्यकालीन भारत के शूरवीर छत्रपति शिवाजी की वीरता एवं स्वातन्त्रेय प्रेम की कथावस्तु है, जिसमें मुगलबादशाह औरंगजेब की समस्त कुटिल चालों को असफल करते हुए अपनी स्वतंत्रता की रक्षा की है। यह वीर रस प्रधान नाटक है। इस नाटक में शिवाजी की भाँति वीर सैनिक एसाजी, तानाजी, वाजी, प्रान्ताधिप आवाजी एवं उनके मित्र की स्वतंत्रता के पुजारी अपना सर्वस्व आत्मबलिदान करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं–

उद्वर्तमेनां परिपीड़ितां भुवं,

धर्मच्युतैरु–मादराजं संघैः।

साम्राज्य संस्थापनमन्तरेण,

न वर्ततेऽन्यथाऽर्धकरी प्रतिक्रिया।''[4]

अर्थात् इस भूमि को धर्मच्युत, उन्माद शासकों के अत्याचार से मुक्त करने के लिए स्वतंत्र साम्राज्य स्थापन के अतिरिक्त अन्य कोई श्रेयस्कर मार्ग नहीं है। 'छत्रपति साम्राज्यम्' नाटक के 9वें अंक में शिवाजी का कथन है–

'रणभूमि में जिन लोगों ने अपने शरीर की आहुति को देकर पुण्यलोक को प्राप्त किया। उन श्रेष्ठ वीरों के कुल में जो उत्पन्न हैं, जिन लोगों ने अपनी बुद्धि के प्रताप से शत्रुओं का नाश किया है। जो नीति–निपुण हैं वे सभी राष्ट्रभक्त राजकुल वैभव से यथायोग्य सम्मानित किये जायें।[5]

इस प्रकार याज्ञिक जी ने स्वतंत्रता संग्राम के लिए समर्पित राष्ट्रभक्ति वीरों के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित किया है–

3– संयोगिता स्वयंवरम्

संयोगिता–स्वयंवरम्' याज्ञिक जी की कृति श्रृंगारिक है, जिसमें अन्तिम हिन्दू– दिल्ली सम्राट, पृथ्वीराज चौहान एवं जयचन्द्र की पुत्री संयोगिता के प्रेम विवाह का वर्णन किया गया है। ''जिसमें पृथ्वीराज ने यवन आक्रमणकारी मोहम्मद गोरी का जिस तरह प्रतिरोध किया वह राष्ट्र की रक्षा के लिए महत्त्वपूर्ण कदम था लेकिन 'जयचन्द ने जिस प्रकार यवन आक्रमणकारी का साथ देकर राष्ट्रदोह का परिचय दिया वह हमेशा के लिए घृणा का पात्र बना।''[6] इस प्रकार प्रस्तुत नाटक में राष्ट्र रक्षा के प्रति सम्मान एवं राष्ट्रविरोधियों के प्रति घृणा के भाव जगाये गये हैं।

इस प्रकार याज्ञिक जी प्रस्तुत (तीनों) कृतियों में स्वतंत्रता की रक्षा के लिए, तन, मन, धन से किये गये समर्पण का आदर्श दर्शाया गया है। याज्ञिक जी ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित तीनों राष्ट्रिय नाटकों की रचना कर संस्कृत नाटककारों में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बनाया है। इन्होंने राष्ट्र के प्रति प्रेम–भावना को भरने हेतु वीर रस का आधान किया है। इस प्रकार याज्ञिक जी ने 20वीं शती में ऐतिहासिक नाट्यकृतियों की रचना कर संस्कृत साहित्य के एक विशेष अभाव की पूर्ति की है।

संदर्भः–

1– प्रतापविजयम्, पृ0–02

2– प्रतापविजयम्, 1/21

3– प्रतापविजयम्, 2/7

4– छत्रपतिसाम्राज्यम् 1/8

5– छत्रपतिसाम्राज्यम् 9/17

6– संयोगितास्वयंवरम् पृ0–94